

དབལ་རྒྱ་ལ་རྒྱུ་ལ་ཆེན་པོ་བཅུ་བདུན་གྱི་གསལ་འདེབས་དང་གསུམ་གསལ་བྱེད་
ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

འགྲོ་ལ་ཕན་བཞེད་ཐུགས་རྗེས་རབ་བསྐྱེད་བའི།
ཐུངས་རྟོགས་སྟོབ་པ་མཆོག་བརྟེན་ལྟ་ཡི་ལྟ།
རྟེན་འབྱུང་གཏམ་གྱིས་འགྲོ་རྣམས་འདྲེན་མཛད་བའི།
ཐུབ་དབང་སྣ་བའི་ཉི་མར་མགོས་ཕྱག་འཆལ།།༧།

जगदुपकृतिकामस्त्राणबोधप्रहाणं
वरमसिकरुणोत्थंप्राप्तवान्देवदेव।
नयसिसकललोकंयत्प्रतीत्योदयोक्त्या
मुनिवरशिरसात्वांवादिमार्तण्डनौमि॥ १ ॥

ཇག་དུཔ་གྱི་ཉི་གུ་མ་སྒྲུ་ཆ་བོ་རྟེན་ལྟ་ཁྱོ་
ཕར་མས་ཀུ་རྟོ་ཐྱོ་བླ་ལྟ་ལྟ་དེ་བཞེད་བ།
ན་ཡ་སིས་ཀལ་ལོ་ཀི་ཡ་རྒྱ་རྒྱ་ཉི་དཔོ་བྱ་
ཐུ་ནི་ཕར་ཤིར་སྒྲུ་ཁྱོ་ལྟ་དེ་ལྟ་རྟེན་ལྟ་ཁྱོ་མེ།།༧།

जगदुपकृतिकामस्त्राणबोधप्रहाणं
वरमसिकरुणोत्थंप्राप्तवान्देवदेव।
नयसिसकललोकंयत्प्रतीत्योदयोक्त्या
मुनिवरशिरसात्वांवादिमार्तण्डनौमि॥ १ ॥

जगदुपकृतिकामस्त्राणबोधप्रहाणं
वरमसिकरुणोत्थंप्राप्तवान्देवदेव।
नयसिसकललोकंयत्प्रतीत्योदयोक्त्या
मुनिवरशिरसात्वांवादिमार्तण्डनौमि॥ १ ॥

ཀུལ་ཡུམ་དགོངས་དོན་མཐའ་བལ་དེ་ཉིད་དོན།།

རྟེན་འབྲུང་རིགས་ཚུལ་ཟབ་མོས་གསལ་མཁས་པ།
 རྒྱལ་བའི་ལུང་བཞིན་ཐེག་མཆོག་དུ་མའི་ཐོལ།
 འབྱེད་མཛད་སྤྱི་སྤྱོད་ཞབས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། ༢།

तत्त्वार्थप्रोज्झितान्तंजिनवरजननीभावितार्थप्रतीत्यो-
 त्पादंगम्भीरयुक्त्याप्रवचनकुशलानीतवन्तःप्रकाशम्।
 यानामध्यमाख्यंनयमनुजिनसंव्याकृतिंयेयथार्थं
 प्राणैषुस्तांश्चनागार्जुनगुरुचरणान्सादरंप्रार्थयेवः॥ २॥

དྲུག་ཅི་ཤོད་དྲུག་ཅི་ན་མར་ཅན་ལྷ་མི་དྲུག་ཅི་ཤོད་
 རྟེན་གཞིར་ཡུལ་སྤྱོད་པ་མཚན་ཀླུ་ཤུ་ལྷ་མཆོག་དུ་མའི་ཐོལ།
 ཡུལ་མཆོག་ལྷ་མི་ན་མཚན་ཅི་ན་ལྷ་མི་དྲུག་ཅི་ཤོད་པ་མཆོག་
 ལྷ་མི་དྲུག་ཅི་ན་ལྷ་མི་དྲུག་ཅི་ན་ལྷ་མི་དྲུག་ཅི་ན་ལྷ་མི་དྲུག་ཅི་ན་ ༢།

तत्त्वार्थप्रोज्झितान्तंजिनवरजननीभावितार्थप्रतीत्यो-
 त्पादंगम्भीरयुक्त्याप्रवचनकुशलानीतवन्तःप्रकाशम्।
 यानामध्यमाख्यंनयमनुजिनसंव्याकृतिंयेयथार्थं
 प्राणैषुस्तांश्चनागार्जुनगुरुचरणान्सादरंप्रार्थयेवः॥ २॥

तत्त्वार्थप्रोज्झितान्तंजिनवरजननीभावितार्थप्रतीत्यो-
 त्पादंगम्भीरयुक्त्याप्रवचनकुशलानीतवन्तःप्रकाशम्।
 यानामध्यमाख्यंनयमनुजिनसंव्याकृतिंयेयथार्थं
 प्राणैषुस्तांश्चनागार्जुनगुरुचरणान्सादरंप्रार्थयेवः॥ २॥

དེ་སྤྱོད་སྤྱོད་པ་མཆོག་ཤིང་སྤྱོད་པ་མཆོག་
 ཤིང་སྤྱོད་པ་མཆོག་སྤྱོད་པ་མཆོག་སྤྱོད་པ་
 ཤིང་སྤྱོད་པ་མཆོག་སྤྱོད་པ་མཆོག་སྤྱོད་པ་
 ཤིང་སྤྱོད་པ་མཆོག་སྤྱོད་པ་མཆོག་སྤྱོད་པ་ ༣།

तेषांशिष्यवरोबभूवसुधियांमान्यःससिद्धाग्रणीः
पारंयश्चगतःपरंनिजपरप्रस्थानपाथोनिधेः।
नागाचार्यपरम्परांधृतवतांचूडामणिर्योबभौ
तस्मैश्रीजिनसूनवेनमइदंभक्त्यार्यदेवायमे॥ ३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

तस्यैतिशुबवावसूवसद्विर्मागुह ससिद्धयतीह
 यार्वैतन्नगतह यर्बैनिद्धयवयश्चनयाश्चानिद्धह
 नायायागुयवयर्बौद्धतवर्तौवृद्धमतिश्रावर्तौ
 तस्यैत्तौद्धिनसूनवनमसूद्धैतत्तागुदवात्तमा३॥

ଓଷାସିଦ୍ଧାଦିବଦନ୍ତସୁଧିଶୈଳାଗ୍ରଃ ମସିହାପ୍ରଳୀଃ
 ସାର୍ବଭୌମଃ । ସର୍ବନିଜସବ୍ୟସ୍ଥାନସାଧାନିବଃ ।
 ନାମାସ୍ତୁସବ୍ୟସାବିତ୍ରଓଷାଓଷାମସିଦ୍ଧାଦିବଃ
 ଓଷାଓଷାଦିନସୁନଦନନଳଦିବଃ ।

འཕགས་པའི་དགོངས་པ་རྟེན་འབྱུང་མཐར་ཐུག་དོན།
བདགས་ཡོད་མིང་རྒྱང་ཙམ་གྱི་ཟབ་མའི་གནང།
གསལ་མཛད་གྲུབ་པ་མཆོག་གི་སར་གཤེགས་པ།
སངས་རྒྱུ་བརྟུངས་ཀྱི་ཞབས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས།༥

आर्यस्याभिमतंप्रतीत्यवचसःपर्यन्तमर्थंचसत्
प्रज्ञसंखलुनाममात्रमितियद्गम्भीरमर्मापिच।
स्पष्टीकृत्यवरागसिद्धिमहितांभूमिंचयःप्राप्तवान्

कुर्वेतस्यचबुद्धपालितगुरोःपादाम्बुजाध्येषणाम्॥४॥

[illegible]

गुणानिमित्तवतीत्यवयवसङ्गस्य गुणमन्वयवयवता
 यद्वैयर्थ्यलुप्यमानमिति सद्गुणोत्पत्तिमायिवा
 यश्चैकवयवसिद्धिमन्तिर्ननुमिदं सङ्गस्यैव
 कथं तस्यैव सङ्गस्यैव तस्यैव सङ्गस्यैव सङ्गस्यैव

**ଆସ୍ତ୍ରାୟାହିମଠିଷଡ଼ଅବଦରଃସସ୍ତୁଗର୍ଭୈସରଃ।
ସନ୍ନପ୍ତୁଂଅଲ୍ପନାମନାଅମିତିକ୍ଷନ୍ନୌଲୋକମର୍ଣାସିହ।
ସ୍ୟସ୍ତ୍ରୀକ୍ରୁଅବବାପ୍ରସିଦ୍ଧିମଦିଠିଶ୍ଚୈର୍ନିସକଃସ୍ୟସ୍ତୁଦାନ
କୁର୍ବତ୍ୟାସବଦଧାଲିତମ୍ବାଃସ୍ୟାନ୍ନାସ୍ତଜାତ୍ୟସ୍ୟାମ୍ନା॥୧॥**

བདེན་པའི་དངོས་པོ་སྟེ་སྐུ་གསལ་མཐའ་བཀག་ཅིང་།
 ཚད་མ་མཐུན་སྣང་བྱེད་ན་བཞེད་པ་ཡི།
 གྲུབ་མཐའི་སོལ་གཏོད་ཡོངས་རྫོགས་པ་རྩེ་༩།
 སྟོབ་དཔོན་ལེགས་ལྷན་འབྲེད་ལ་གསོལ་བ་འདེབས།༥༥།

भावानामुदयोभवत्यपिसतामित्याद्यमन्तंतिर-
स्कुर्वन्त्योऽप्यवभासनं प्रमितियुक्सामान्यमादिष्टवान्।
अङ्गीकृत्य च बाह्यमर्थमपियः सिद्धान्तमास्थापयद्
भव्यंतं परिनिष्ठितं बद्धवरं प्राचार्यमभ्यर्थये॥५॥

[illegible]

ಸದಾನಾಮದಸಾರುಪಾಧಿಪತಾಮಿಶ್ರಾಶ್ರಮಶೈಲಿ
 ಸ್ವರ್ಣಾಃಪ್ರವಲಮನೈವನಿಶಿಸ್ತಾಘಾತಾದಿಸ್ವಾಭಾ
 ಶಕ್ತಿಶ್ಚಾಪ್ರವಾಹಮನೈವನಿಶಿಸ್ತಾಘಾತಾದಿಸ್ವಾಭಾ
 ಶಕ್ತಿಶ್ಚಾಪ್ರವಾಹಮನೈವನಿಶಿಸ್ತಾಘಾತಾದಿಸ್ವಾಭಾ

ཉེན་འབེལ་རྒྱན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་ཉིད་ཀྱིས།
 མཐའ་གཉིས་སེལ་བའི་སྣང་སྟོང་དབྱ་མའི་ཚུལ།
 ཟབ་རྒྱས་འདོམས་མཁས་མདོ་སྟགས་ཡོངས་རྫོགས་ལམ།
 རྒྱས་མཛད་ལྷ་བ་གྲགས་པར་གསེལ་བ་འདེབས། ༦།

एतत्प्रत्ययताप्रतीत्यसमनूत्पादेनसान्तद्वयो-
त्क्षेपमध्यमकंगभीरमदिशत्प्राज्ञोह्यदारंनयम्।
मार्गकृत्स्नमकुर्वतातिविततंयःसूत्रतन्त्रात्मकं
भूयोऽहंप्रणमामिपण्डितवरंतंचन्द्रकीर्तिगुरुम्॥ ६॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

गमो वै त्रिविधं यत्किञ्चिन्मूलकवन्नान्यथ
तद्वागनमन्त्राद्यावति यच्चैविस्मा यत्कञ्चतमा

याङ्ग इमौ रत गान् विनयनिबन्धानादन्नया माससङ्ग
 सैत्याववदत्तौ वरैर्दिनरतैर्तैर्ज्ञानिदयानिबन्धाः ॥

[illegible]

གདུལ་བྱའི་ཁམས་བཞིན་གཉིས་སྟོང་དབུ་མའི་ལམ།
 སྤོལ་གཏོང་དབུ་ཚད་རིགས་ཚུལ་འབྱེད་མཁས་ཤིང་།
 ཁ་བའི་མྱེངས་སྤྱ་རྒྱལ་བསྟར་སྤེལ་མཛད་བ།
 མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཛོལ་གསོལ་བ་འདེབས། ༥།

मार्गमध्यमकद्विताविरहितंयावद्विनेयाशयं
नीत्वामध्यमकंप्रमाणगतयायुक्त्यानयंवर्तयन्।
देशेयोजिनशासनंहिमवतिप्रोत्कर्षमापीपदत्
प्राज्ञंतंखलुशान्तरक्षितमहोपाध्यायमध्येषये॥८॥

[illegible]

मार्गमधु मर्कटितावीचदितैसावद्रविनसासर्ग
नीलामधु मर्कटयमातागतसासृष्टानर्गवतसना
दन्नसाजिनसासर्गद्विमवतियाव.यमायीयदत्त
याजैतैस्त्वत्तावद्वितमन्नायायासमधुयसास

युग्मेयत्रविपश्यनासशमथातद्भावनायाःक्रमं
मुक्तान्तंनिजगादमध्यममतंयःसूत्रतन्त्रानुगम्।
अभ्रान्तंजिनशासनंहिमवतिप्राकाश्यमातन्वतः
संयाचेचरणाम्बुजंकमलयुक्शीलस्यतस्यानतः॥ ९॥

श्रमस्तत्रवियच्छनासन्नमन्नातज्ञावनाद्याह्वयै
 मन्नातैर्निद्रयादमन्नामन्नातैर्नद्रयादमन्नातैर्
 नद्रयादमन्नातैर्नद्रयादमन्नातैर्नद्रयादमन्नातैर्
 नद्रयादमन्नातैर्नद्रयादमन्नातैर्नद्रयादमन्नातैर्

ସଂସାରସ୍ତବିଷୟୀନାମାମଧ୍ୟାତ୍ମବିଜ୍ଞାନାଦିଶ୍ଳୋକ

རྒྱ་རྒྱ་ཡུལ་གྱི་སམསྐབས་ཀྱི་མེད་ལྟོ་འཁུགས་ཀྱི་
 སྐབས་ཀྱི་འཁུགས་ཀྱི་སམསྐབས་ཀྱི་མེད་ལྟོ་འཁུགས་ཀྱི་
 སྐབས་ཀྱི་འཁུགས་ཀྱི་སམསྐབས་ཀྱི་མེད་ལྟོ་འཁུགས་ཀྱི་
 སྐབས་ཀྱི་འཁུགས་ཀྱི་སམསྐབས་ཀྱི་མེད་ལྟོ་འཁུགས་ཀྱི་

नीलान्धानगतैरसमस्तयिदुर्लभैस्तत्तादृग्यत्नात्
सैवृद्धिर्बलित्विसर्वैरसमदिनगार्ग्यसहयष्टितद्।
विद्वन्नाह्यमतयवतनविर्विद्यादृष्टमनयाकृतै
वक्तव्यगुणवसद्भविदयद्वयान्नसैव्याचक्षते॥१०॥

नीलाशानगुंरामसुविहर्षोभयसुखसुप्रसन्न
 सौवर्द्धितविभुर्बेरागदिङ्मागैश्वर्यसहस्रपुत्रः॥

[illegible]

आ इ झीकृतानिवचनसप्तकसमुद्दिष्टानिवचनयुक्तौ
 व्यावर्ह्यौ द्वसन्नगुणौ तसमयवैसवकृतीतिद्वितीया
 सिद्धताश्चकथीयकथविद्विद्यामसवैनायिकान
 व्यावर्ह्यौ वसवचनमष्टिकमलयरुतसमश्चरुता॥११॥

ਸਾਹਿਬੁ ਅਨਿਵਰਨ ਸਚੁ ਕਰਮੁ ਦਿਖਾਇ ਖਰਬੀਬੁ
 ਬਾਸੁ ਬੀਜੁ ਸਭੁ ਭੰਸਮੁ ਖਰਬੀਬੁ ਕਾਠਿ ਖਿਤਾ
 ਸਿੰਘੁ ਬੁਧੁ ਕਹੀ ਸੁਖੁ ਬਧਿ ਦੁਖਾ ਮਰਦੁ ਲਖਿ ਕਾਨੁ

ཕྱི་ནང་ཚད་མའི་གནད་ཀྱི་ལེགས་དགོངས་ཤིང་།

མདོ་སེམས་ཟབ་རྒྱས་ལམ་ཀུན་རིགས་ལམ་ནས།
 དེས་སྒྲེང་སྐད་བྱུང་ཆོས་ཚུལ་འདྲོམས་མཁས་པའི།
 ཆོས་ཀྱི་བྲགས་པའི་ཞབས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས།།༡༣།

[illegible]

सौंदर्याय यच्चैतच्च गृह्यते विद्वत्समग्राह्या
गम्यते समुद्रावमागमयितुं सौतेन यच्चैतच्च
नीलाशक्तियश्च न निश्चयं दद्यात्तमवत्प्रादुर्भूतं
निष्ठातश्च समुद्रादित्यदृश्यं तद्वमयीतश्च स्यात् ॥ १३ ॥

ଯେହୁଣିଆଁ ସମସ୍ତେ ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି
 ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି
 ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି
 ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି ଉପାସାଦି

बौद्धन्यायपथंतथान्यविहितंविज्ञायसम्यक्तया
गम्भीरंसमुदारमार्गमखिलंसौत्रंचचैतंतथा।
नीत्वायुक्तिपथेननिश्चयपदयोर्धर्मवत्कर्माद्भुतं
निष्णातःसम्पादिशत्पदयुगंतद्धर्मकीर्तेःश्रये॥ १३॥

ཐོགས་མེད་སྟེ་མཆད་ལས་འདེགས་ཕྱིན་དོན།
 ཡོད་མེད་མཐའ་བཤམ་དབྱ་མའི་སྒྲུབ་བཞིན་ཏུ།
 རྒྱན་གྱི་གཞུང་དོན་སྣང་བའི་སྟོན་མེ་སྤར།
 འཕགས་པ་གྲོལ་བྱའི་ཞབས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། ༡༥།

स्वीकुर्वन्सदसद्वयान्तरहितंयोमध्यमाख्यंनयं
प्रज्ञापारमितार्थमागतमवाप्यासङ्गसोदर्यतः।
योऽलङ्कारसदर्थभासनपरंदीपंसमद्योतयत्
तस्याप्यार्यविमुक्तिसेनविदुषःपादाम्बुजंप्रार्थये॥ १४॥

स्वीकुर्वन्सदसद्वयान्तरहितं'यो'मध्यमाख्यं'नयं'
'प्रज्ञापारमितार्थमागतमवाप्यासङ्गसोदर्यतः'।
'योऽलङ्कारसदर्थभासनपरंदीपंसमद्योतयत्'
'तस्याप्यार्यविमुक्तिसेनविदुषःपादाम्बुजंप्रार्थये॥१४॥

स्वीकुर्वन्सदसद्वयान्तरहितं'यो'मध्यमाख्यं'नयं'
'प्रज्ञापारमितार्थमागतमवाप्यासङ्गसोदर्यतः'।
'योऽलङ्कारसदर्थभासनपरंदीपंसमद्योतयत्'
'तस्याप्यार्यविमुक्तिसेनविदुषःपादाम्बुजंप्रार्थये॥१४॥

स्वीकुर्वन्सदसद्वयान्तरहितं'यो'मध्यमाख्यं'नयं'
'प्रज्ञापारमितार्थमागतमवाप्यासङ्गसोदर्यतः'।
'योऽलङ्कारसदर्थभासनपरंदीपंसमद्योतयत्'
'तस्याप्यार्यविमुक्तिसेनविदुषःपादाम्बुजंप्रार्थये॥१४॥

पुष्प'द्वय'अङ्ग'द्वय'कुल'सर्व'पुष्प'सर्व'सर्व'
'स्वीकुर्वन्सदसद्वयान्तरहितं'यो'मध्यमाख्यं'नयं'
'प्रज्ञापारमितार्थमागतमवाप्यासङ्गसोदर्यतः'।
'योऽलङ्कारसदर्थभासनपरंदीपंसमद्योतयत्'
'तस्याप्यार्यविमुक्तिसेनविदुषःपादाम्बुजंप्रार्थये॥१४॥

प्राप्यव्याकरणंमुनीन्द्रविहितंमातुःसदर्थोद्धिदं
संश्रित्याजितनाथगुर्वभिहितंयाथाववादक्रमम्।
प्रज्ञापारमितावरत्रिजननीशास्त्रप्रकाशाययो
व्याचख्यौ,हरिभद्रमाश्रितपदःसप्रश्रयंनौमितम्॥ १५॥

སྒྲུབ་ལུགས་ཀྱི་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་ཉི་ཤུ་པ་ལྟེ་མཇུག་པའི་
 སྒྲུབ་ལུགས་ཀྱི་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་ཉི་ཤུ་པ་ལྟེ་མཇུག་པའི་
 སྒྲུབ་ལུགས་ཀྱི་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་ཉི་ཤུ་པ་ལྟེ་མཇུག་པའི་
 སྒྲུབ་ལུགས་ཀྱི་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་ཉི་ཤུ་པ་ལྟེ་མཇུག་པའི་

या शुभाङ्गवर्त्मनीश्वरिदित्तमातङ्गसदञ्चान्निर्दे
 रैस्त्रित्याङ्गितनाश्वरवतिदित्तस्याञ्चावयादवाम्ना
 यङ्गयावमितावयतिङ्गननीनाश्वयकाश्वनाश्व
 यावच्छाङ्गवित्तदमाश्वितयदङ्गसयश्वरैर्नमितमा ७५०

ସାଧୁଆଦିବର୍ଣ୍ଣମୁନିସ୍ବଦିତିଠିନାତୁଃସଦସାହିତ୍ୟ
 ମୈତ୍ରୀଆଦିତନାସ୍ବଦିତିଠିନାସାଦକନମ୍ରା
 ସନ୍ନିଆସମିତାସବଦ୍ବିଜନନୀଽସ୍ବସଦାଽସଦା
 ବ୍ୟାସଽଦିବିରୁଦନାସ୍ବିତସଦଃସସ୍ବସମିନିତମ୍ରା॥୩॥

འདུལ་བ་འབྱུང་ཟེའི་དགོངས་དོན་ལེགས་བསྟན་ནས།
ཐམས་ཅད་ཡོད་ལྷེའི་ལྷགས་བཞིན་སོ་སོ་ཐར།
མ་ནོར་ལེགས་འདོམས་བརྟན་མཁས་མཆོག་གྱུར་བ།
ཡོན་ཏན་འདྲ་གྱི་ཞབས་ལ་གསོལ་བ་འདེབས། ༡༥།

भावार्थविनयस्यलक्षपिटकात्सङ्गृह्यसंक्षेपतो
यःसंश्रित्यपरम्परामधिगतांसर्वास्तिवादेयथा।
अभ्रान्तंसुधियांवरःसमदिशद्यःप्रातिमोक्षंदृढ-
स्तस्यायंरचितोगुणप्रभगूरोःपादप्रणामाञ्जलिः॥ १६॥

[illegible]

सहनिश्चितिसाहस्यसञ्जगमतिश्रीवत्तवासादियह

ਸਤਗੁਰੁ ਨਾਨਕ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ
 ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਹਿਬੁ

गूढोदारमशेषवाग्विलसितंपारम्परीणंमुने-
र्वाचोविस्तरमध्वनित्रिपुरुषक्राम्येयआदिष्टवान्।
तेनेदूरतरंहिमाद्रिविषयेप्राज्ञोमुनेःशासनं
तंभट्टारकमाह्वयेऽहमतिशंभक्त्याकृपालुंप्रभुम्॥ १८॥

བློ་རྒྱལ་མཁའ་ཤེས་ཀྱི་ལམ་ནི་ལྷན་སྐྱོར་གྱི་མཆོ-
 བ་ཙུང་མེས་ཀྱི་མཁའ་མཛོད་ནི་བུ་ཕུང་ཡུ་མུ་ཡ་ལྟ་བུ་སྤྲུལ་ན།
 ཉེ་ལོ་རྒྱུ་ཏཱ་ཏི་ཉི་མའི་མེ་ཤེལ་བློ་མཆོད་མཆོད་ལྷན་སྐྱོར་
 ཉི་མཁའ་ལྷན་སྐྱོར་གྱི་མཁའ་མཛོད་ནི་བློ་རྒྱལ་མཁའ་ཤེས་ཀྱི་མཆོད་པ་ལྟ་བུ་སྤྲུལ་། ༡༩༥༥

गुह्यज्ञानमन्त्रयथाशिलसिर्तयावश्यागोर्तुगता-
वशाद्विज्ञानमन्त्रनितियथावकाशस्तथादिशूयान्ना।

तनद्भवतयेदिमादिवियसयाञ्जगुनइत्तासने
तैतश्चावकाभाक्षसइदमतिनैतव्याव्यालवसमा॥१॥

ସୁଦ୍ଧାଦାସମତାସଦାସ୍ଥିତାସିଠିଆବନ୍ଧାବିନିଗୁଣ-
 ଦିଆଦିଯୁବନସ୍ତନିଦ୍ରିସକାସକାଶାଦିସୂକ୍ଷ୍ମା
 ଉନନ୍ଦୁବତ୍ତବିନାଦିଦିସକାଶାଶୁଗୁଣଃଶାରଣ
 ଠିରୁଦାସକାଶାଶୁଶୁଦନାତିଶୈରୁଦାଶାଶୁଶୁଦନା॥୨॥

དེ་ལྟར་འཛམ་གླིང་རྒྱུ་ལྷུར་མཁས་པའི་ཕུལ།
 ངོ་མཚར་ལེགས་པའདྲ་འབྱུང་གནས་མཆོག་རྣམས་ལ།
 མི་ཕྱེད་དང་བའི་ཡིད་ཀྱིས་གསོལ་བ་དབང་པས།
 བདག་རྒྱུད་སློབ་ཅིང་གོལ་བར་བྱིན་གྱིས་རྟོགས། ༡༩།

जम्बुद्वीपललामपण्डितवराएवंमयाध्येषिता
आश्चर्याढ्यसदुक्तिरत्ननिवहरेष्ठाकराःसंस्तवैः।
याचेऽभेद्यचिरप्रसन्नमनसासम्पादिताध्येषणो
मुक्तौसम्यगधिष्ठिताभवतुमेपक्वाशयासन्ततिः॥ १९॥

[illegible]

ङमुद्रियललामयष्टितववागर्वमस्याद्यिता
 गुणगुणमदक्तिवतनितदयष्टितवागर्वमस्याद्यिता
 त्यावदतद्यष्टितवसन्नमनसासस्याद्यिताद्यष्टिता
 मुक्तिसमुपदिष्टितातवतमयक्षन्त्यासन्नतिष्ठता ॥१२॥

ଉଷ୍ଣଦ୍ବିଧଲିଙ୍ଗମସଞ୍ଚିତସ୍ୟାପ୍ରସଙ୍ଗମସାଦ୍ୟସିତା
 ଆସ୍ୟଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣକୃଷ୍ଣବଳିନିବଦସ୍ୟସ୍ମାଦବାହୁସୈଷ୍ଠିକା
 ନାୟଃଋଷିବିଷୟମଗ୍ନମନସାମନ୍ୟାଦିତାଦ୍ୟସଜ୍ଞା
 ଗୁହ୍ୟମଗ୍ୟମବିଦ୍ଧିତାରୁଦ୍ରପ୍ରମୟଦ୍ବାପାମାମଭୃତ୍ତିଶା ୨୯॥

གཤི་ཡི་གནས་ཚུལ་བདེན་གཤིས་དོན་ཤེས་པས།
བདེན་བཞིས་འཁོར་བ་འཇུག་ཚྭ་རྩེ་བཞིན་ངེས།
ཚད་མས་དངས་པའི་སྐྱབས་གསུམ་དད་པ་བརྟན།
ཐར་ལམ་རྩ་བ་ཚུགས་པར་བྱིན་གྱིས་རྣོབས། ༡༧།

वस्तूनामधिगम्यसंस्थितिनयंसत्यद्वयार्थचतुः-
सत्यैर्निश्चिनुयांभवंप्रतियथावृत्तिंनिवृत्तिततः।
श्रद्धामेशरणत्रयेदृढबलाभूयात्प्रमावंहिता
भूयासंसमधिष्ठितःकलयितुंमोक्षाध्वमूलंदृढम्॥ २०॥

[illegible]

वसूनामविगम्यैश्चितिनर्तसत्ताद्वयाच्चैवतद्
सत्तानिश्चिनर्तैर्नर्तयतिस्त्रावृत्तिनिवृत्तिततद्।
वसूनामविगम्यैश्चितिनर्तसत्ताद्वयाच्चैवतद्
सत्तानिश्चिनर्तैर्नर्तयतिस्त्रावृत्तिनिवृत्तिततद्॥३०॥

इक्ष्वाक्याय अमर उलम्बसैमाक्षुदधमति-
निश्राजकामादिगुह्यविधिर्बुद्धेयराक्षसा

སྐྱེ་ཞིང་སྐྱེ་བར་བསྐབ་གསུམ་ལྔ་ན་པའི་རྟེན།
ལྷགས་ཐོབ་བཤད་དང་སྐབ་པས་ལུང་རྟོགས་བསྟན།
འཛིན་ཅིང་སྤེལ་ལ་ཤིང་རྟ་ཆེ་ཆམས་དང་།
མཚུངས་པར་བསྟན་ལ་བྱ་བ་བྱེད་པར་ཤོག།༢༣།

लब्ध्वाजन्मनिजन्मनिस्वभिमतंशिक्षात्रयस्याश्रयं
वाचासाधनयागमाधिगमतःख्यातंमुनेःशासनम्।
सन्धार्यानुसरन्महारथिगणंविस्तारयन्सर्वतः
कार्येऽस्मिन्सकलेचशासनपरेशक्तोभवेयंसदा॥ २३ ॥

ཡུལ་པ་རྒྱལ་གྱི་རྒྱལ་གྱི་སྤྱི་མཉམ་ཏེ་ཤིས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་པ་
 རྒྱལ་གྱི་སྤྱི་མཉམ་ཏེ་ཤིས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་པ་
 ཡུལ་པ་རྒྱལ་གྱི་རྒྱལ་གྱི་སྤྱི་མཉམ་ཏེ་ཤིས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་པ་
 ཡུལ་པ་རྒྱལ་གྱི་རྒྱལ་གྱི་སྤྱི་མཉམ་ཏེ་ཤིས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་པ་

लघुवाङ्मनिङ्मनिस्यति मर्तैस्त्रिंशत्सयान्नक्षत्रै
 वायासावनत्यागमाद्विगमतद्दृष्ट्या तैश्च नक्षत्रासनमा
 सन्नाशाग्रसम्भक्त्या विगतां विश्वासस्तथावतद्
 कथमुदसिन्नकालवन्नासनयवत्तत्त्वानवर्षे सन्ना॥२३॥

ଶିଶୁବାଜୁଗାନିଜୁଗାନିସ୍ବରୁମିଠିଆସ୍ବଦ୍ବସ୍ୟାଅର୍ଥେ
 ଦାସାସାଧନକ୍ଷାମକାଦିମମତଃସ୍ବୀଠିମୁନଃସାରନତ୍ରା
 ମହାହାନ୍ମୁମବହାନ୍ନାବଦ୍ବିମର୍ଦ୍ଦିୟାବଦ୍ବମର୍ଦ୍ଦିତଃ
 ଦାସାଃସ୍ବିଶ୍ବକଳିୟସାରନସବଦ୍ବକୃତ୍ବର୍ଥେମନା॥୨୩॥

འདུས་ཐེ་ཀུན་ཏུ་ཐོས་བསམ་བཤད་སྒྲུབ་ཀྱི།
 བྱ་བས་དུས་འདའ་ལོག་འཛོ་ཡོངས་སྤངས་པའི།
 དམ་པའི་མཁས་སྐུབ་རབ་དུ་འཕེལ་བ་ཡིས།
 འཛིན་སྲིང་ས་ཆེན་རྟག་དུ་འཛོལ་གྱུར་ཅིག་པུ།

श्रुत्याचिन्तनसाधनाप्रवचनैःकालंनयद्भिःसदा
मिथ्याजीवपराङ्मुखैर्बुधवरैःसद्भिश्चसिद्धोत्तमैः।

सङ्घाःस्युःपरिपूरिताअविरतंवृद्धिगतैस्तैरियं
जम्बुद्वीपमहामहीचसततंभूयादलंमण्डिता॥ २४॥

[illegible]

॥ ग्यायित्तनसाधनायवचनैश्चकलैर्नमस्त्रिंशद्गदा
 मिच्छाढीवयवाशुभैर्वचनैश्चसद्भिश्चसिद्धान्तैश्च।
 सत्प्राणैश्चविद्युविताग्रविचरैश्चद्विगैश्चैविहै
 ङमुञ्चयमन्त्रमन्त्रावसतर्तनाद्यादलैर्मष्टिता॥३८॥

ॐ, आशिषु न साधनाय च सर्वे ॥ नमो नमो ॥ नमो
 निष्ठाधीनय च सर्वे ॥ नमो नमो ॥ नमो नमो ॥
 नमो नमो ॥ नमो नमो ॥ नमो नमो ॥ नमो नमो ॥
 नमो नमो ॥ नमो नमो ॥ नमो नमो ॥ नमो नमो ॥

དེ་མཐུས་མདོ་ཐུགས་ཡོངས་རྫོགས་ས་ལམ་བཟོད།
 དོན་གཉིས་ལྷན་གྲུབ་རྣམ་མཁྱེན་རྒྱལ་པ་ཡི།
 གོ་འཕང་ལྷུང་བ་ཉིད་དུ་ཐོབ་ལྷུང་ནས།
 ལྷུང་མཁའ་ཇི་མེད་འགྲོ་བའི་དོན་བྱེད་ཤོག།༢༥།

एतेषांबलतःप्रविश्यसकलंतंसूत्रतन्त्रात्मकं
मार्गभूमियुतं,प्रसाधनमनाभोगंद्वयस्यार्थयोः।
सर्वज्ञस्यपदंजिनस्यनचिरंविन्देय,तस्यांस्थितौ
यावत्स्याद्गुणंममास्तूनितरांलोकार्थकार्येरतिः॥ २५॥

ཨེ་ཏེ་འོ་བལ་ཏུ་མེ་བྱ་སཀལ་ཏི་སྤྲུང་རྒྱུ་ཀོ་

[illegible]

गतस्यैव ततश्च विद्या सत्त्वैर्तैस्ततस्तत्त्वैर्वा
 मार्गैर्नृमिहर्तैश्च साधनमनात्तर्गैश्च साध्याश्च साध्याः।
 सत्त्वैश्च साध्याश्चैर्दिनैश्च नृमिहर्तैश्च विद्या सत्त्वैर्वा
 साध्याश्च साध्याश्चैर्दिनैश्च नृमिहर्तैश्च विद्या सत्त्वैर्वा

ପ୍ରତିପଦାଦିଃ ସ୍ଵାଧିଷ୍ଠାୟକାଃ ପ୍ରତିପଦାଦିଃ
 ମାଂସାଦିଃ ପ୍ରତିପଦାଦିଃ ମାଂସାଦିଃ
 ମାଂସାଦିଃ ପ୍ରତିପଦାଦିଃ ମାଂସାଦିଃ
 ମାଂସାଦିଃ ପ୍ରତିପଦାଦିଃ ମାଂସାଦିଃ

དངམ་རྒྱ་ལྗོངས་པའི་ཆེན་བཅུ་བརྒྱུ་གྱི་གསལ་འདབས་དང་གསུམ་གསལ་ཕྱེད་སྐུ་ཅ་དབུས་ཤོད་གྱི་ལུག་ལག་སྟོབ་ཁང་གི་འབུམ་རམས་པ་དག་པའི་མཆོས་བཟང་དོན་རྒྱུ་ལྷིན་ལེགས་ལྟར་
མ་དཔེ་གཞིར་བཟུང་མགས་ཡིག་ཏུ་ཕབ་པའོ། །